International Journal of Applied Research 2022; 8(4): 244-247

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(4): 244-247
www.allresearchjournal.com
Received: 10-02-2022
Accepted: 14-03-2022

डॉ0 जीत सिंह
ऐसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कु0 मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुध नगर, उत्तर प्रदेश, भारत

कविता रानी
शोध विद्यार्थी, हिन्दी विभाग, कु0 मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुध नगर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
कविता रानी
शोध विद्यार्थी, हिन्दी विभाग, कु0 मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुध नगर, उत्तर प्रदेश, भारत

रामदरश मिश्र के उपन्यासों में शिक्षा के लिए संघर्षरत नारियाँ

डॉ0 जीत सिंह, कविता रानी

शोध सारांश
शिक्षा का मानव जीवन में बहुत बड़ा महत्त्व है। हमारे समाज की, हमारे परिवार की, हमारे राष्ट्र की और हमारे देश की प्रगति के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है। भारत पुरूष प्रधान देश है। भारत देश की अधिकांश जनता गाँवों में निवास करती हैं। पुरूष प्रधान होने के कारण गाँवो में नारी शिक्षा पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता था क्योंकि अधिकतर लोग अशिक्षित, रूढ़िवादी और परम्परावादी होते हैं। उनका मानना होता है कि लड़कियों को पढ़ाई–लिखाई से क्या वास्ता? उन्हें तो घर के काम–काज सीखने चाहिए। घर के काम–काज उन्हें उनकी माँ सहज रूप से बिना पढ़ाई के ही सीखा देती है। रामदरश मिश्रजी ने ग्रामीण जीवन जिया है। उन्होंने गाँव की नारियों की दुर्दशा का कारण अशिक्षा को माना है। मिश्रजी ने अपने उपन्यासों के पात्रों के द्वारा यह दिखाया है कि नारी शिक्षा कितना जरूरी है। नारी शिक्षा से नारी का विकास होगा और उसके अन्दर आत्मविश्वास पैदा होता है। आत्मविश्वास होने पर वह अपने अधिकारों को जान सकती है। शिक्षा प्राप्त होने से नारी अपने ऊपर हो रहे अन्याय और अत्याचारों का विरोध कर सकती हैं। मिश्रजी के उपन्यासों में लगभग अधिकतर नारी पात्र थोड़ा बहुत पढ़ लेते है। ज्यादातर नारी पात्र पढ़ाई के लिए संघर्ष करते है जैसे–'जल टूटता हुआ' उपन्यास में शारदा, 'अपने लोग' में विभा 'बिना दरवाजे के मकान' में दीपा, 'दूसरा घर' उपन्यास में शोभा 'थकी हुई सुबह' में लक्ष्मी, 'बीस बरस' उपन्यास में पवित्रा आदि नारी पात्र शिक्षा के लिए गाँव के रूढ़िवादी, परम्परावादी और अशिक्षित परिवार वाले अपने माता–पिता से समाज की कुप्रथाओं और कुरीतियों का विरोध कर शिक्षा प्राप्त करती है।

कूट शब्द: रामदरश मिश्र, उपन्यासों में शिक्षा, प्रगति के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक

प्रस्तावना
शिक्षा का मानव जीवन में बहुत बडा महत्त्व है। स्त्री और पुरूष एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। शिक्षा का अधिकार दोनों को प्राप्त होने पर भी भारत देश में ग्रामीण इलाकों में नारी साक्षर प्रतिशत बहुत कम है। नारी शिक्षा के विषय में बात करने से पहले हमें शिक्षा क्या है? यह जानना आवश्यक है।''शिक्षा मानव जीवन का मेरूदण्ड़ है। वह मानव के सर्वांगीण विकास का सर्वोत्तम साधन है और मानव जीवन की आधारशिला है। शिक्षा के बिना मानव न तो कार्यक्षमता की वृद्वि कर सकता है। और न ही वह जीवन के अभीष्ट की उपंलब्धि में सफलता प्राप्त कर सकता है क्योंकि शिक्षा ही मानव की वृद्धि में व्याप्त सम्पूर्ण जड़ता को दूर करती है उसकी सम्पूर्ण शक्तियों को विकसित करती है। उसके मान– सम्मान की वृद्वि करती है। और उसकी कीर्ति देश–देशान्तरों में फैलती है। शिक्षा के बिना न मानव को आदर प्राप्त होता है न यश की प्राप्ति होती है और न उसके मनोरथों की पूर्ति होती है।''[1]

नारी परिवार की रीढ़ होती है। एक परिवार मे नारी माँ ,बहन, पत्नि और बेटी आदि किसी न किसी रूप में परिवार से जुडी है। यदि परिवार में नारी शिक्षित होगी तो हमारा परिवार शिक्षित होगा । परिवार में माँ की भूमिका अहम् होती है। अगर माँ शिक्षित होगी तो वह अपनी सन्तान का भविष्य बना सकती है। क्योंकि बालक के विकास पर पहला और सबसे ज्यादा प्रभाव उसकी माँ का ही पडता है। माँ ही बच्चे की पहली अध्यापक होती है। अगर वह शिक्षित होगी तो वह अपनी गृहस्थी को भी सुचारू रूप से चला सकती है। यदि आवश्यकता पडती है तो वह अपने परिवार की आर्थिक रूप से नौकरी कर सहायता कर सकती है। शिक्षा के कारण महिलाओं में आत्मविशवास पैदा होता है। नारी के पतन का कारण अशिक्षा है और शिक्षा से नारी की उन्नति हो सकती है। यदि नारी शिक्षित होगी तो वह अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों को जान सकती है और अन्याय के खिलाफ आवाज उठा सकती है। उपन्यासकार रामदरश मिश्रजी ने भी नारी की दुर्दशा का कारण अशिक्षा को माना है। नारी चाहे शहर की हो या गाँव की उसके लिए शिक्षा आवश्यक है। मिश्रजी ने अपने सभी उपन्यासों मे चाहे वह निम्न जाति की हो या उच्च जाति की सभी नारियों को शिक्षा प्राप्त करने की लालसा होती है। कुछ पात्र तो संघर्ष करके शिक्षा प्राप्त करते हैं।

गाँवों में लडकियों को पढ़ाया नही जाता है। क्योंकि गाँव के ज्यादातर लोग अशिक्षित और गरीब है या फिर रूढ़िवादी और परम्परावादी है। जिनके कारण वे लोग सोचते है कि लड़कियों को तो घर में काम–काज सिखाने चाहिए। उसे पढ़कर नौकरी थोड़ी करनी है घर के काम काज उसकी माँ उसे सहज रूप से सिखा ही देगी। फिर पढ़कर क्या करेगी। दूसरा, यदि छोटी जाति के लोग अपनी बेटी को पढ़ाते हैं तो लोग उन पर तरह तरह के ताने कसते हैं। एक समस्या यह भी है कि ज्यादातर गाँवों में स्कूल भी कम है जिसके कारण लोग अपनी बेटी को दूसरे गाँवों में पढ़ाने नहीं भेजते हैं क्योंकि दूसरे गाँवों में उनकी असनाई होती है उन्हें डर रहता है कि कही ऊँच–नीच न हो जायें। गाँवों मे जो लोग पढ़े लिखे शिक्षित और सम्पन्न परिवार से है वे अपनी लड़कियो को शहर में भी पढाते है और जो सम्पन्न लोग शहर में अपनी पुरानी रूढ़िवादी सोच के कारण भेज नही पाते वे लोग घर पर ही पढ़ाई की व्यवस्था कर देते है।

'पानी के प्राचीर' उपन्यास शीर्षक में नीरू की बहन लीला दर्जा चार में पढ़ती थी लेकिन अर्थाभाव के कारण और गाँवो में मिडिल तक ही स्कूल होने से आगे नही पढ़ पाई। 'जल टूटता हुआ' ,उपन्यास में गाँवों के मुखिया रूढ़िवादी स्वभाव वाले आदमी है। उनकी विचारधारा भी लड़कियों के ज्यादा पढ़ाने के पक्ष में नहीं है। वे लड़कियों को केवल मिडिल तक की पढ़ाई के पक्षपाती थे उनके अनुसार पढ़ा–लिखाकर लड़कियों को कलैक्टर बनाना या नौकरी तो नहीं करानी हैं लेकिन दीनदयाल के भाई शहर में जाकर नौकरी करते है। उनको पता हैं कि नारी शिक्षा की क्या अवश्यकता है वे अनपढ़ होते हुए भी शारदा की पढ़ाई के लिए जोर देते हैं,–

> ''दोनों चाचा बंका में रहते थे वे स्वयं अनपढ़ हैं। लकिन दुनिया देखी हैं, उन्होंने देखा हैं कि विदेश की लड़कियॉ पढ़ी लिखी है तेज तर्रार हैं। इतना ही नहीं हिन्दुस्तान के जो गुजराती, मदरासी, बंगाली, पंजाबी वहां हैं। उनकी भी लड़कियॉ पढ़ती लिखती है। उनकी शारदा पढ़े यह उन्होंने बार–बार कहां है।''[2]

शारदा पढ़ने में तेज थी, लेकिन दीनदयाल को सह–शिक्षा पसन्द नहीं थी और शहर में शारदा को भेजना नहीं चाहता था। शारदा पढ़ना चाहती थी। वह पिताजी से ज़िद करके पढ़ने के लिए कहती हैं। पिता दीनदयाल को मजबूरी में घर पर ही मास्टर उमाकान्त पाठक द्वारा सन्ध्या की पढाई की व्यवस्था करनी पडती हैं। इस कथन की पुष्टि निम्नलिखित उदाहरण से की जाती हैं,

> ''शारदा ने कहा भी कि पिताजी मुझे गोरखपुर भेज दीजिए। नही गोरखपुर जाने पर लड़की के लिए पैसा पानी की तरह बहेगा। बल्कि यह भी कि अकेली शारदा कैसे रहेगी? ना,ना उसे अकेली शहर में नहीं छोड़ सकते। शहर में बड़े वैसे लोग बसते है। हालांकि शारदा बिटिया स्वभाव की बडी पक्की हैं। मगर जवानी ही तो हैं। ना,ना शहर नहीं भेजेगे उसे।''[3]

'अपने लोग' उपन्यास में प्रमोद दिल्ली में रहता है। उसके पिता जी गाँव में रहते है। किसी काम से दिल्ली में आये हुऐ है। जब पोती विभा को देखा तो उसकी शादी के लिए कहते है। विभा ने अभी इन्ट्रेंस ही पास किया हैं। प्रमोद के पिता रूढ़िवादी और पुराने विचारों के हैं। उनका मानना है कि लडकी शादी के लायक हो गयी है इसकी शादी कर दो हमारे यहाँ कोई रीत नही है कि लडकी को पढ़ाकर नौकरी कराने की। लेकिन प्रमोद पढा–लिखा युवक हैं वह अपनी बेटी को पढ़ाकर कुछ बनाना चाहता है। अपने पिता के रूढ़िवादी विचारों से परेशान हैं और सोचता है,–

> ''क्यों ये लोग दखल देते हैं हर बात में। लडकीं मनबढ़ हो गयी है पिता के लिए इन लोगों के संस्कार को लड़के–लड़कियो को अलग–अलग देखने के है। लड़की को अपने बारे में कुछ भी बोलने का अधिकार नहीं होना चाहिए। वह अपने ही सामने अपने भाईयों को अच्छा खाते और अच्छा पहनते देखती हैं और यह संस्कार बना लेती हैं कि उसे चुपचाप अधिकार को पहचान लेना चाहिए। वैसे पिताजी बहुत उदार है। किन्तु लड़की के मामले उनके विचार काफी दूर तक रूढ़िवादी ही है। लड़की के प्रति उनकी यह प्रवृत्ति उनकी कूरता का नहीं उनके संस्कार का परिणाम हैं।''[4]

''बिना दरवाजे का मकान'' उपन्यास की नायिका दीपा जब अपने आस–पास लड़कियो को पढ़ते हुए देखती हैं। तो उसकी की भी इच्छा पढ़ने की होती है। वह अपनी सहेलियों को पढ़ते देखती तो सोचती कि कितना अजीब है कि लाइनें भी बोलती हैं वह अपनें पढ़ने की इच्छा अपने पिताजी को बताती है । तो पिताजी उसे समझाते कि बेटी पढ़ाई लिखाई हम लोगों के लिए नहीं हैं। दीपा पिताजी से पढ़ने के लिए ज़िद करती कि पिताजी मैं तो पढूँगी पढ़ने लिखने पर किसी का नाम नहीं लिखा । दीपा के पिताजी उसकी ज़िद के सामने हार मानकर उसका दाखिला स्कूल में करा देते है। उस गाँव में ब्राह्मणों और ठाकुरों की कुछ लड़कियाँ ही स्कूल जाती थी। दीपा मल्लाह की छोटी जाति की लडकी थी। उस गाँव में मल्लाहों के लड़के भी जब स्कूल जाते तो लोग ताने मारते थे। जब दीपा स्कूल जाती थी तो उसे लोगों के तरह–तरह तानों का शिकार होना पडता था। दीपा ने बडी मुसीबतों के बाद तो स्कूल में पढ़ना शुरू किया है लेकिन कुछ समय बाद गाँव के धनी ठाकुर बंसीलाल के बेटे रूपनसिंह ने दीपा के साथ यौन शौषण करने की कोशिश की। जिसके कारण उसी दिन उसकी पढ़ाई रोक दी गई। गाँव की ऊँची जाति के लोग नीची जातियों पर अत्याचार करना अपना हक समझते हैं। ऐसा ही दीपा के साथ हुआ। इस कथन की पुष्टि निम्नलिखित उदाहरण से की जाती है,–

> ''सबसे पहला काम तो यह हुआ कि उसी दिन मेरी पढ़ाई छुड़ा दी गयी। दूसरा काम यह हुआ कि मेरे टोले के कुछ लोग ठाकुर बंसीलाल के यहा शिकायत लेकर गये तो मालूम पड़ा कि उलटे मेरे ऊपर कीचड़ उछाला गया। वहां बैठे लोगों ने हंस हंस कर मजाक किये और कहा ऐसी कौन से आफत आ गयी कि तुम लोगो में इतनी हलचल मच गयी है। और जवान लडका है। जरा–सी छेड़खानी कर दी तो क्या हो गया?,''[5]

ऊँची जाति के पुरूषों के कारण दीपा जैसी लड़कियों की शिक्षा प्राप्त करने की इच्छाओं का दमन हो जाता हैं।

कुछ जगह पर लड़कियों को ज्यादा या उच्च शिक्षा इस कारण नहीं दी जाती क्योंकि वहाँ पर दहेज की समस्या उत्पन्न हो जाती है इसी कारण ज्यादातर लोग अपनी लड़कियों को थोडा बहुत ही पढ़ाते है। 'दूसरा घर' उपन्यास में शोभा माता–पिता के साथ चाली मे रहती हैं। वह पढ़ना चाहती हैं। किन्तु पिता गरीब मजदूर हैं। पिता शोभा को पढ़ाना चाहते हैं। लेकिन माता उसे पढ़ाना नही चाहती क्योंकि पढने–लिखने के बाद दहेज की समस्या सामने खडी हो जाती हैं। माँ कहती है,

> ''– क्या पाँव पर खडी होगी बचवा? इतना पढ़–लिखकर अपने पावों पर खड़े होने की तुम्हें कितनी मुसीबत उठानी पडी! कौन पूछता है गरीबों को और नही तो पढ लिख लेने के बाद ऊँची शादी और ऊँचे दहेज का भूत खड़ा हो जाएगा।''[6]

''थकी हुई सुबह'' उपन्यास में नायिका लक्ष्मी समाज के गले सडे–ढाँचे में छटपटती हुई उसकी मानसिक स्थिति का बड़ा ही सशक्त चित्रण किया है। लक्ष्मी बचपन से ही नारी मुक्ति, नारी संघर्ष और नारी पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ अपनी माँ से तरह–तरह के प्रश्न करती रहती। लक्ष्मी जब लडकों को पढते हुए जाते देखती तो उसके मन में भी पढ़ने की इच्छा होती। पिताजी से पढ़ने के लिए कहती तो अशिक्षित रूढ़िवादी पिता मना कर देते,''– नही बेटी, लड़कियाँ कहाँ पढ़ती है। लड़कियो को पढ़ाई लिखाई से क्या वास्ता?''[7]

लक्ष्मी के गरीब अशिक्षित पिता उसे स्कूल भेजकर सबकी नजरो में आना नही चाहते थे क्योंकि गाँवो के सम्पन्न लोग भी अपनी लड़कियों को नही पढ़ाते थे। लक्ष्मी में पढ़ने की इच्छा दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। वह अपने भाई की पुस्तकों से वर्णमाला सिख लेती है। वह सोचती है।,

> ''–कैसे है लोग कि वह पढने को कह रही हैं तो उसे मना किया जा रहा है और भाई पढ़ने से भागता है। तो उसे पढ़ने के लिए मनाया जा रहा हैं। ऐसा क्यो हो रहा है। लोगो के पास एक ही उत्तर है कि वह लड़की है। लड़की होना कोई पाप है क्या?''[8]

लक्ष्मी जब जब अपने आसपास नारी पर अत्याचार या उसका शोषण होता देखती तो उसके मन में सबसे बचने का केवल एक ही उपाय दिखाई देता कि लड़कियों को पढ़ना चाहिए। यदि नारी शिक्षित नहीं होगी तो उसमें जाग्रती उत्पन्न नहीं होगी। वे शिक्षित होकर नारी वीर माता ,बहादुर पत्नि,साहसी और स्वावलम्बी पुत्री और देश की सच्ची सेविका बनेगी लेकिन यह तभी सम्भव है जब वे शिक्षित होगी। स्वामी विवेकानन्द,राजा राममोहन राय और गाँधी जी आदि अनेक नेताओं ने नारी शिक्षा पर बल दिया है। लक्ष्मी अपने भाई की किताबों का बस्ता अपने पास रखकर उसकी उष्मा महसुस करती थी। एक दिन ऐसे कही वह भाई की किताबो को उलट–पलट कर रही थी। पुस्तक मे उसे कुछ फोटों दिखाई दिये उसने पढ़कर देखा तो उसमें नारी की शिक्षा पर जोर दिया गया था। वह खुश होकर पिताजी को दिखाती हैं कि देखिए पिताजी गाँधी जी ने क्या कहां है,–

> ''देखिए, इस किताब मे क्या लिखा है। लिखा है कि देश की समाज की उन्नति चाहते हो तो स्त्रियों को शिक्षित करो। शिक्षा प्राप्त करके स्त्रियों की उन्नति जब तक नहीं होगी तब तक देश और समाज की उन्नति नहीं होगी।''[9]

लक्ष्मी के पिता ने लक्ष्मी को पास के गाँव टाड़ा में दाखिला दिला दिया। उसमे स्कूल में कोई भी लड़की नहीं पढ़ती थी। गाँव में केवल पढ़ने वाली केवल वह अकेली लडकी थी। लडकी जिस गाँव में पढ़ने जाती थी वहाँ के ज्यादातर लोग अशिक्षित थे। लक्ष्मी जब स्कूल जाती तो गाँव के लोग ताने मारते थे कि कलूप भाई की बेटी कलेक्ट्रर बनेगी। लक्ष्मी को देखकर अन्य लड़कियों की भी इच्छा होती पढ़ने की तब लक्ष्मी उन्हें समझाती की उसके घरवालों ने ही कहा खुशी से भेजा हैं। वह अपनी सहेलियों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करती है। लक्ष्मी के पढ़ने की बात धीरे–धीरे आस पास के सभी गाँवों में फैल गयी। यदि नारी शिक्षित होती है तो उसके विवाह में दहेज देने की आवश्यकता भी नही होगी। दहेज एक अभिशाप है। जिसके कारण गरीब अपनी बेटी को या तो कम उम्र में बाल विवाह या अनमेल विवाह करने के लिए विवश होते है। जिसके बाद या तो वे विधवा हो जाती है या उन पर अत्याचार किये जाते है यदि लडकी पढ़ी–लिखी होगी तो वह इन समस्याओं का सामना बड़ी आसानी से कर सकती है। लक्ष्मी की पढ़ाई को देखकर ही उसकी शादी के लिए पडोस के गाँव के वकील साहब अपने बेटे सागर के लिए लक्ष्मी का रिश्ता माँगते है। तब लक्ष्मी अपने माता पिता को बताती है कि चलो आप लोगों को पढ़ाई की अहमीयत तो पता चली। लक्ष्मी आज के समय में एक मध्यवर्गीय परिवार की जरूरतों को पूरा करना वास्तव में कठिन है। शादी के बाद अगर एक शिक्षित लडकी काम करती है तो वह अपने पति के साथ परिवार में खर्चो को पूरा करने में मद्द कर सकती है। लक्ष्मी पढ़ी–लिखी थी पति के घर छोडकर भाग जाने के बाद अपने मायके आकर दोबारा पढाई शुरू करती है क्योंकि उसको पता है कि शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा वह अपने अस्तित्व की पहचान प्राप्त कर सकती हैं और अपने गरीब माता पिता की सहायता कर सकती है लक्ष्मी को पढ़ता देखकर उसके मास्टर साहब अन्य बच्चों को बताते है कि पढ़ने की कोई उमर नही होती,–

> ''गधो देखो विधा की लगन होती है। जिसे तुम लोग अकबकाकर देख रहे हो वह विद्या की लगन की जीती जागती मिसाल है। विद्या की प्राप्ति के लिए कोई उमर बाधक नही होती देखो, लक्ष्मी एक बड़े घर की बहू और बड़ी उम्र मे भी विद्या की लगन उन्हें कक्षा में खीच लायी है। और उन्हें तुम लोगो के साथ टाट पर बैठकर विद्या प्राप्त करने में कोई संकोच नही है।''[10]

जब लक्ष्मी पढ़ने लगी तो उसके मार्ग में बहुत से अवरोध पैदा होते थे। उसे कदम–कदम पर परेशानियों का सामना करना पडता है क्योंकि गाँवो मे लड़कियों को पढ़ाया नहीं जाता हैं। उन्हें पढने के लिए संघर्ष का सामना करना पडता है। जब लक्ष्मी पढ़ने जाती थी तो गाँव की अशिक्षित औरतों के उसे ताने सुनने पडते थें,–

> ''अरे अब इस उम्र में पढ़ने की क्या जरूरत थी। इस गाँव से उस गाँव तक घर से स्कूल तक कुदक्का मारती घुमती है। इसे छोटें–छोटें बच्चों के साथ बेंठने में लाज नही आती बनी होती तो एक बच्चे की माँ बन गई होती।''[11]

लक्ष्मी ने अपने मार्ग में आने वाली सारी समस्याओं का साहसपूर्ण सामना करके स्वालम्बी बन गयी। लक्ष्मी रामपुर में 8 बजे से 11 बजे तक शिक्षिका के रूप में पढ़ाती और उसके बाद अपनी कक्षा की पढ़ाई करती थी। पाँच रूपये महीने की तनख्वाह ने उसको आर्थिक रूप से सहायता प्रदान की। इन रूपयों से उसे सहारा ही नही मिला था अस्मिता भी मिल गयी थी। लक्ष्मी कक्षा सात में द्वितीय स्थान प्राप्त कर, लखनऊ में ट्रेनिग स्कूल की पढाई में द्वितीय स्थान प्राप्त कर कोशेपुर के स्कूल में नौकरी करती है। यही है लक्ष्मी के समाज की गली–सडी मान्यताओं ,रूढ़ियों अशिक्षित और परम्परावादी सोच का सामाना करते हुए उनका विरोध करके अस्मिता प्राप्त कर लेती है।

समय बदलने के साथ गाँवो में भी नारी शिक्षा का प्रचार प्रसार बढा है। मिश्र जी ने अपने उपन्यास ''बीस बरस'' में इसका चित्रण किया है इसमें गाँव की छोटी जाति की चमरोटी सुखदेव की भांजी पवित्रता घर में संघर्ष करके बारहवी प्रथम स्थान में पास करके ट्रेनिग ली और मास्टरनी बन गयी। अब प्राईवेट बी0ए0 करना चाहती है। ''रात का सफर'' उपन्यास में पढी लिखी युवती ऋतु छः साल तक पति के अन्याय को सहन करने के बाद पति को चॉटा मार कर विवाह विच्छेद कर लेती है और आगे पढ़कर अपनी जिन्दगी नये सिरे से सवारने का निश्चय करती हैं।

> ''जीवन की बढती हुई कीमत के कारण एक मध्यमवर्गीय परिवार के लिए परिवार के पुरूष मुखिया आय के आधार पर परिवार चलाना मुश्किल हो गया है। अतः परिवार के मुखिया

की आय को कूछ और बढाने के लिए पत्नि या बेटी को भी नौकरी करने की जरूरत पडती है। अतः अधिकारधिक स्त्रियां शिक्षा ग्रहण कर रही है।''[12]

निष्कर्ष

आज के समय में परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करना वास्तव में कठिन है। यदि नारी शिक्षित होती है तो वह अपने पति के साथ अपने परिवार की आर्थिक स्थिति के सुधार में उसका सहयोग कर सकती है इसलिए हमें नारी शिक्षा को बढावा देना होगा। वैसे तो सरकार द्वारा कई योजनाओं और बहुत से कार्यक्रम चलाये जा रहे है जिनके द्वारा नारी को शिक्षित किया जा रहा है। इन योजनाओ की सफलता के कारण ही आज नारी पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर हर क्षेत्र में आगे बढ रही है। जिस देश में महिलाएँ शिक्षित नही होगी वहाँ पर आर्थिक और सामाजिक विकास की कल्पना नही की जा सकती।

शिक्षा द्वारा ही समाज में परिवर्तन किया जा सकता है। और इस प्रकार सभ्य और सुसस्कृत समाज में नारी की स्थिति को सुधारा जा सकता है। यदि एक माँ शिक्षित होती है। तो वह अपनी आने वाली पीढ़ियो को सही मार्गदर्शन दे सकती है और घर में गृहस्थी की गाडी सुचारू रूप से चला सकती है।

मिश्र जी के कुछ उपन्यासों में ज्यादातर नारी पात्र थोडा बहुत पढ़ लेती है। कुछ नारी पात्र रूढिवादी परम्पराओ के विरूध विद्रोह कर शिक्षा प्राप्त करती है। और स्वावलम्बी बनकर अपनी अस्मिता प्राप्त करती है।

अतः प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य यही है कि एक शिक्षित नारी ही भविष्य में निराशा, अशिक्षा, गरीब और शोषण के अन्धकार से निकलकर परिवार और समाज को सही राह दिखा सकती है।

सन्दर्भ सूची

1. साहित्यिक निबन्ध, भारत की आधुनिक शिक्षा पद्धति, लेखक डॉ0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ ,नई दिल्ली। पृष्ठ सं0 378
2. 'जल टूटता हुआ' उपन्यास, रामदरश मिश्र रचनावली, भाग–5 पृष्ठ सं0 –304
3. वही पृष्ठ सं0– 305
4. 'अपने लोग 'उपन्यास ,रामदरश मिश्र रचानावली, भाग,–6 पृष्ठ सं0– 138
5. 'बिना दरवाजे का मकान' उपन्यास रामदरश मिश्र रचनावली, भाग–6,पृष्ठ सं0 –548
6. 'दूसरा घर 'उपन्यास, रामदरश मिश्र रचनावली ,भाग–7 पृष्ठ सं0 –129
7. 'थकी हुई सुबह' उपन्यास ,रामरदश मिश्र रचनावली ,भाग–7 पृष्ठ सं0–260
8. वही, पृष्ठ सं0 –269
9. वही, पृष्ठ सं0–275
10. वही, पृष्ठ सं0– 325
11. वही, पृष्ठ सं0–326
12. 'भारतीय राष्ट्वाद की अधुनातन प्रवृत्तियाँ' ए0 आर0 देसाई, पृष्ठ सं0 –120